IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M03/130/H(1)

**HINDI A1 – HIGHER LEVEL – PAPER 1**
**HINDI A1 – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1**
**HINDI A1 – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1**

Monday 19 May 2003 (afternoon)
Lundi 19 mai 2003 (matin)
Lunes 19 de mayo de 2003 (mañana)

2 hours / 2 heures / 2 horas

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- Ne pas ouvrir cette épreuve avant d'y être autorisé.
- Rédiger un commentaire sur un seul des passages.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento.

**नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (क) तथा (ख) । इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए ।**

**(क)**

नए घर आने के बाद से ही पापा उसकी शादी के लिए भाग दौड़ करने लग गए थे । कई बार उसने रो-रोकर मम्मी को मनाने की कोशिश की ... बार बार गिड़गिड़ाई कि वह अनूप के सिवाय किसी और से शादी करके कभी सुखी नहीं रह पाएगी, मगर डाँट-फिटकार, पुरानी परंपरा और आदर्शों की दुहाई देकर तथा उपदेशों और भाषणों से उसकी जबान बंद कर दी गई।

वह जितना ही अनूप को भूलने की कोशिश करती, वह उतना ही दिल की गहराई में अंदर बैठता जाता । पुराने मकान से चलते समय उसकी चकित हिरणी सी चंचल निगाहें चारों ओर अनूप को ढूंढ रही थीं । जब सारा समान ट्रक पर लद रहा था, वह चुपके से आँगन में आ गई थी । अनूप के बेडरूम की पीछे वाली खिड़की खुली हुई थी ... परदा हवा से काँप काँप जाता था ... शायद अर्चना के हृदय से तालमेल कर परदा भी उसका साथ दे रहा था ।

अनूप खिड़की के सींखचे पकड़े आँगन की ओर टकटकी लगा चुपचाप खड़ा था, उदास स्तब्ध सा । शायद आशा की हल्की-सी किरण उसके दिल में भी कौंधी थी --- चलते चलते अर्चना की एक झलक दिख जाए ...

अर्चना की आँखें जब ऊपर उठी तो सीधे अनूप की बड़ी बड़ी आँखों से टकरा गई थीं । एक पल दोनों बिना पलक झपकाए तृषित-से एक दूसरे को निहारते रहे थे ... फिर अचानक अर्चना की पलकें झुक गई थीं । जोरों की रुलाई फूट पड़ी थी और वह मुँह पर दुपट्टे का छोर दबाकर आँधी- सी आँगन से भाग आई थी ।

बरसों के अंतराल के बाद आज भी खिड़की पर खड़े अनूप की दो उदास आँखे उसकी स्मृति में सावन भादों की काली बदली को चीरती, बिजली-सी उसके दिल को चीरती हुई आर-पार हो जाया करती हैं । उन आँखो में दर्द का सैलाब भरा था - अब छलका, तब छलका ... जिन होंठों पर हमेशा मंद मुसकान की रेखा खिंची होती थी उन पर पपड़ियां पड़ गई थीं, जैसे किसी ने दर्दीली सुई चुभो कर होंठों की मुसकराहट सोख ली हो । चार-छः दिनों में ही अनूप कैसा बीमार सा लग रहा था । अर्चना को अनूप का सूखा मुरझाया चेहरा जब भी याद आता, उसका कलेजा मुँह को आ जाता ।

उसका जी चाहता, स्वयं अपना गला घोंटकर पापा के थोथे आदर्श पर अपनी बलि दे दे । किस जालिम ने ऐसे रिवाज, ऐसे कानून बनाए हैं जो प्यार भरे दिलों के प्यार को सोखकर उसे उजाड़-वीरान रेगिसतान का रूप देने की अनुमति देते हैं ?

अर्चना अपने हृदय की बात किसी से भी न कह पाती थी, कहकर फायदा भी क्या था ? कौन उसके दिल की बात सुनने को तैयार था ? किसे फुरसत थी, उसके मन-प्राण के जख्मों को देखने और उसकी मरहमपट्टी करने की ?

कनक लता 'रिसते जख्म' *'दो हिस्सों में बँटी मैं' 1994* विद्या विहार नई दिल्ली 110002

(ख)

# हमारे युग का नायक

खत्म हो जायेंगे राजकाज के तरीके पुराने
स्वतन्त्रता समानता की राह में
नहीं है दरकार कोई दाँव पेंच न ही कोई तिकड़म
चाहिए नहीं कोई लौहपुरुष न कूटनीतिज्ञ
जो सबसे नेक हैं सबसे दयालू जो ठगे जाने की हद तक सरल
वे ही आयेंगे आगे

खत्म हो जायेगा एक दिन मूर्खों का राज
पकवानों का भोग छकता महन्थ
हथगोलों बारूद का ढेर गिनता सन्त
और माफिया गिरोहों के डॉन
नष्ट हो जायेंगे एक दिन
तब, जिनकी आत्मा सबसे पवित्र है
तब, जो जगे हैं, रात भर बेचैन ओस से भरे
वे ही आयेंगे आगे

खत्म नहीं होंगे आदिम आदर्श
खत्म नहीं होगा स्वतन्त्रता समानता का स्वप्न
मनुष्य अभी पूरा स्वतन्त्र नहीं हुआ
समानता का लक्ष्य अभी पूर्ण नहीं हुआ
खत्म नहीं होगा स्वतन्त्रता समानता का स्वप्न
जो उतना ही झूठ है उतना ही सच
जितना कि शून्य जितना अनन्त
तब, खड़े होंगे करोड़ों करोड़ एक साथ
और चलेंगे सब प्रकाश की ओर

अरुण कमल "नये इलाके में" वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 110002